

नई अर्थव्यवस्था और मानवीय संकट –हिन्दी कहानी के संदर्भ में

डॉ० गुलवीर मोहन यादव *

साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद,
गुजरात

सारांश

1990 के दशक के बाद भारतीय समाज में आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं ने अर्थव्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक जीवन, पारिवारिक संरचना, रोजगार, उपभोग, मानवीय संबंधों और व्यक्ति की जीवन-दृष्टि को भी गहरे रूप से प्रभावित किया। नई अर्थव्यवस्था ने अवसरों, गतिशीलता, तकनीकी विस्तार और उपभोक्ता विकल्पों में वृद्धि की, किंतु इसके समानांतर आर्थिक असमानता, रोजगार की असुरक्षा, श्रम के अनौपचारिकीकरण, विस्थापन, अकेलेपन, प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावादी मानसिकता और मानवीय संबंधों के बाजारीकरण जैसी समस्याएँ भी उभरीं। हिन्दी कहानी ने इन परिवर्तनों को संवेदनशीलता और आलोचनात्मक दृष्टि के साथ अभिव्यक्त किया है। नई हिन्दी कहानी में आर्थिक परिवर्तन केवल बाजार, नौकरी या धन के रूप में उपस्थित नहीं होता, बल्कि वह व्यक्ति के मानसिक संसार, पारिवारिक संबंधों, प्रेम, विवाह, नैतिकता, आकांक्षाओं और सामाजिक पहचान को भी प्रभावित करता है। महानगरीय जीवन, कॉरपोरेट संस्कृति, बेरोजगारी, अस्थायी रोजगार, प्रवासी श्रमिक, मध्यवर्गीय उपभोक्तावाद, स्त्री का बदलता आर्थिक स्वरूप, ग्रामीण संकट और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे विषय समकालीन कहानी के महत्वपूर्ण सरोकार बने हैं। इस दृष्टि से हिन्दी कहानी नई अर्थव्यवस्था के बाहरी स्वरूप के साथ उसके अंतर्निहित मानवीय संकट को भी सामने लाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में नई अर्थव्यवस्था की अवधारणा, उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव, हिन्दी कहानी में उसके प्रतिफलन, मध्यवर्गीय जीवन, श्रम-संकट, उपभोक्तावाद, स्त्री-जीवन, ग्रामीण समाज, प्रवासन, महानगरीय अकेलापन तथा मानवीय संबंधों के विघटन का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का मूल तर्क यह है कि समकालीन हिन्दी कहानी आर्थिक परिवर्तन को केवल विकास की कथा के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसके भीतर छिपे मानवीय संकट, असमानता और संवेदनात्मक विघटन को भी रेखांकित करती है।

Keywords: नई अर्थव्यवस्था, आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण, हिन्दी कहानी, मानवीय संकट, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, मध्यवर्ग, श्रम, विस्थापन, महानगरीय जीवन, सामाजिक यथार्थ।

1. प्रस्तावना

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। साहित्य अपने समय के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है तथा उन परिवर्तनों को नए अर्थ और संवेदनात्मक गहराई के साथ प्रस्तुत करता है। इसलिए किसी भी साहित्यिक विधा का अध्ययन उसके सामाजिक संदर्भों से अलग करके नहीं किया जा सकता। हिन्दी कहानी विशेष रूप से सामाजिक यथार्थ की सूक्ष्म अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण विधा रही है। कहानी सीमित आकार में व्यक्ति और समाज के बीच उपस्थित तनावों, संघर्षों और अंतर्विरोधों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। भारत में 1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण ने आर्थिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए। निजीकरण, वैश्वीकरण, बाजार का विस्तार, विदेशी निवेश, सूचना-प्रौद्योगिकी का विकास, सेवा क्षेत्र का विस्तार और उपभोक्ता संस्कृति का प्रसार नई अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ बनीं। आर्थिक सुधारों ने अनेक नए अवसर पैदा किए, लेकिन

* Corresponding Author: Dr. Gulveer Mohan Yadav

E-mail: mamtacollege123@gmail.com

Received 05 June 2024; Accepted 21 July 2024. Available online: 30 July 2024.

Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)

[This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](#)



इसके साथ सामाजिक जीवन में अनेक तनाव भी उत्पन्न हुए। नई अर्थव्यवस्था ने व्यक्ति को अधिक विकल्प दिए, परंतु विकल्पों की इस बढ़ती दुनिया में असुरक्षा भी बढ़ी। रोजगार के नए क्षेत्र खुले, लेकिन स्थायी रोजगार के स्थान पर अनुबंध, अस्थायी और लक्ष्य-आधारित रोजगार की प्रवृत्ति बढ़ी। बाजार ने जीवन को सुविधाजनक बनाया, लेकिन मनुष्य की इच्छाओं को भी बाजार की आवश्यकताओं से जोड़ दिया। व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा अनेक बार उसकी क्रय-क्षमता से निर्धारित होने लगी।

1.1 नई अर्थव्यवस्था— अवधारणा और स्वरूप

‘नई अर्थव्यवस्था’ से आशय उस आर्थिक व्यवस्था से है जिसमें उत्पादन, सेवा, वित्त, सूचना, तकनीक, बाजार और वैश्विक पूँजी के संबंध पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक और परस्पर जुड़े हुए हैं। भारतीय संदर्भ में नई अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार निम्न हैं—

- आर्थिक उदारीकरण
- निजीकरण
- वैश्वीकरण
- बाजार का विस्तार
- सेवा क्षेत्र की वृद्धि
- सूचना एवं संचार तकनीक
- कॉरपोरेट संस्कृति
- वित्तीयकरण
- उपभोक्तावाद
- डिजिटल अर्थव्यवस्था
- अस्थायी एवं अनुबंध आधारित रोजगार
- वैश्विक श्रम-बाजार

नई अर्थव्यवस्था ने जीवन की गति को तेज किया और सामाजिक संबंधों को भी अधिक गतिशील बनाया। किंतु इस प्रक्रिया में पारंपरिक सामुदायिक संबंधों और स्थिर जीवन-मूल्यों पर दबाव बढ़ा।

1.2 नई अर्थव्यवस्था और साहित्य का संबंध

आर्थिक व्यवस्था केवल उत्पादन और वितरण की प्रणाली नहीं होतीय वह मनुष्य के जीवन-मूल्यों को भी प्रभावित करती है। व्यक्ति क्या खरीदता है, कहाँ रहता है, किस प्रकार काम करता है, किस सामाजिक वर्ग से जुड़ता है और अपने भविष्य की कल्पना कैसे करता है। इन सभी पर आर्थिक संरचना का प्रभाव पड़ता है।

इसलिए आर्थिक परिवर्तन साहित्य के विषयों में भी प्रवेश करता है। नई अर्थव्यवस्था के कारण हिन्दी कहानी में निम्न नए संदर्भ उभरे—

- महानगरीय जीवन
- कॉरपोरेट संस्कृति
- उपभोक्ता मानसिकता
- नौकरी की असुरक्षा
- बेरोजगारी
- प्रवासन
- आर्थिक विषमता
- तकनीकी जीवन
- अकेलापन
- बदलते पारिवारिक संबंध
- स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता
- जीवन में प्रतिस्पर्धा

1.3 आर्थिक उदारीकरण और हिन्दी कहानी

1990 के दशक के बाद हिन्दी कहानी के सामाजिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। कहानीकारों ने बदलते मध्यवर्ग, नए रोजगार, बाजार की शक्ति और उपभोग की संस्कृति को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। पूर्ववर्ती कहानियों में आर्थिक संघर्ष प्रायः गरीबी, भूख, सामंती शोषण और वर्गीय विषमता के रूप में उपस्थित था। नई अर्थव्यवस्था के बाद आर्थिक संकट के रूप बदल गए। अब संकट केवल 'रोटी' का नहीं रहा, बल्कि—

*रोजगार, पहचान, प्रतिस्पर्धा, प्रतिष्ठा, उपभोग, मानसिक शांति' संयुक्त संकट बन गया।

बाजारवाद का प्रभाव

नई अर्थव्यवस्था का सबसे व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव बाजारवाद के विस्तार के रूप में दिखाई देता है। बाजार अब केवल वस्तुओं की खरीद-बिक्री तक सीमित नहीं रहा। उसने जीवनशैली, सौंदर्य, शिक्षा, मनोरंजन, संबंधों और सामाजिक प्रतिष्ठा को भी प्रभावित किया। हिन्दी कहानी में बाजारवादी संस्कृति कई रूपों में दिखाई देती है—

- वस्तुओं के प्रति आकर्षण
- ब्रांड-चेतना

- आर्थिक सफलता की आकांक्षा
- सामाजिक प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा
- उपभोग के माध्यम से पहचान निर्माण
- व्यक्ति का बाजार में 'उपभोक्ता' में बदलना

1.4 उपभोक्तावाद और मानवीय संकट

उपभोक्तावाद नई अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव है। विज्ञापन व्यक्ति को निरंतर नई इच्छाएँ प्रदान करता है। वस्तु केवल आवश्यकता नहीं रहती, बल्कि प्रतिष्ठा और पहचान का प्रतीक बन जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति—

आवश्यकता → इच्छा → आकांक्षा → प्रतिस्पर्धा → असंतोष

के चक्र में फँस सकता है। समकालीन कहानी इस स्थिति को परिवार, प्रेम, विवाह और व्यक्तिगत संबंधों के स्तर पर भी देखती है। वस्तु-केंद्रित जीवन में व्यक्ति की संवेदना और संतोष प्रभावित होते हैं।

1.5 मध्यवर्ग और नई अर्थव्यवस्था

नई अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव भारतीय मध्यवर्ग पर पड़ा। नए रोजगार, शिक्षा, तकनीक और उपभोक्ता वस्तुओं की उपलब्धता ने मध्यवर्गीय जीवन में नए अवसर पैदा किए। लेकिन इसके साथ मध्यवर्गीय व्यक्ति पर सफलता का दबाव भी बढ़ा। आज का मध्यवर्गीय पात्र अक्सर—

- बेहतर नौकरी चाहता है
- अधिक वेतन चाहता है
- बेहतर घर चाहता है
- बच्चों को श्रेष्ठ शिक्षा देना चाहता है
- सामाजिक प्रतिष्ठा चाहता है
- आर्थिक सुरक्षा चाहता है।

इन आकांक्षाओं के बीच उसका मानसिक तनाव और पारिवारिक समय कम होता जाता है। हिन्दी कहानी में यह मध्यवर्गीय द्वंद्व एक महत्वपूर्ण मानवीय संकट के रूप में सामने आता है।

1.6 नौकरी और रोजगार की असुरक्षा

नई अर्थव्यवस्था ने रोजगार के नए अवसर दिए, लेकिन रोजगार का स्वरूप भी बदल दिया। स्थायी नौकरी की जगह अनुबंध, अस्थायी, लक्ष्य-आधारित और परियोजना-आधारित रोजगार का विस्तार हुआ। इससे कर्मचारी के भीतर भविष्य को लेकर असुरक्षा उत्पन्न होती है। कहानी में इसका स्वरूप—

- नौकरी जाने का डर
- प्रमोशन की प्रतिस्पर्धा
- बॉस का दबाव
- अधिक काम
- कम समय
- लक्ष्य पूरा करने की चिंता
- काम और निजी जीवन के बीच संघर्ष के रूप में सामने आता है।

इस प्रकार नई अर्थव्यवस्था का संकट केवल बेरोजगारी नहीं, बल्कि 'रोजगार की असुरक्षा' भी है।

1.7 श्रम का बदलता स्वरूप

नई अर्थव्यवस्था में श्रम का चरित्र बदल रहा है। शारीरिक श्रम के साथ ज्ञान, सूचना और सेवा आधारित श्रम महत्वपूर्ण हुआ है। लेकिन डिजिटल और सेवा अर्थव्यवस्था में श्रम का शोषण समाप्त नहीं हुआ। उसके रूप बदल गए हैं। जहाँ पहले श्रमिक का शोषण मजदूरी और कार्य-स्थितियों के माध्यम से होता था, वहीं अब—

- समय का नियंत्रण
- प्रदर्शन मूल्यांकन
- लक्ष्य
- डिजिटल निगरानी
- मानसिक दबाव शोषण के नए रूप बन सकते हैं।

हिन्दी कहानी इस नए श्रम-संसार को मानवीय दृष्टि से समझने की संभावना प्रस्तुत करती है।

1.8 महानगरीय जीवन और अकेलापन

नई अर्थव्यवस्था ने महानगरों का विस्तार किया। रोजगार और शिक्षा की तलाश में बड़ी संख्या में लोग महानगरों की ओर गए। महानगर व्यक्ति को अवसर देता है, लेकिन उसके साथ अकेलापन भी पैदा कर सकता है। समकालीन हिन्दी कहानी में महानगरीय पात्र अक्सर—

- भीड़ में अकेला
- संबंधों से दूर
- काम के दबाव में
- मानसिक तनाव से ग्रस्त

- समय की कमी से परेशान दिखाई देता है।

यह आधुनिक विडंबना है कि 'संचार के साधन बढ़े हैं, लेकिन संवाद की गहराई कम हो सकती है।'

1.9 परिवार पर नई अर्थव्यवस्था का प्रभाव

आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव परिवार पर भी पड़ा है। संयुक्त परिवारों की संरचना में परिवर्तन, नौकरी के कारण स्थानांतरण, दोहरी आय वाले परिवार और व्यक्तिगत आकांक्षाओं ने पारिवारिक संबंधों को नए रूप दिए हैं। समकालीन कहानी में पति-पत्नी के बीच—

- करियर संघर्ष
- समय की कमी
- आर्थिक स्वतंत्रता
- घरेलू श्रम का विभाजन
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे प्रश्न दिखाई देते हैं।

इससे परिवार केवल भावनात्मक संस्था न रहकर आर्थिक और व्यावसायिक दबावों से प्रभावित संस्था भी बन जाता है।

1.10 स्त्री और नई अर्थव्यवस्था

नई अर्थव्यवस्था ने स्त्री के लिए रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के नए अवसर खोले। शिक्षा और रोजगार ने स्त्री को परिवार के भीतर निर्णय लेने की अधिक क्षमता प्रदान की। समकालीन हिन्दी कहानी में कामकाजी स्त्री अब केवल पीड़ित पात्र नहीं है, वह अपनी आकांक्षाओं, करियर, प्रेम, देह और जीवन-निर्णयों को लेकर सक्रिय पात्र भी है। लेकिन नई आर्थिक व्यवस्था स्त्री के सामने दोहरा दबाव भी उत्पन्न करती है—

कार्यालय का श्रम, घर का श्रम

अर्थात् आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद घरेलू जिम्मेदारियाँ समान रूप से विभाजित न होने पर स्त्री के सामने 'दोहरी भूमिका' का संकट बना रहता है।

1.11 प्रेम और संबंधों का बाजारीकरण

नई अर्थव्यवस्था ने मानवीय संबंधों को भी प्रभावित किया है। आर्थिक स्थिति, नौकरी, जीवनशैली और सामाजिक प्रतिष्ठा कई बार विवाह तथा प्रेम संबंधों के निर्णयों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगते हैं। समकालीन कहानी यह प्रश्न उठाती है कि क्या प्रेम और संबंध भी बाजार की तर्क-व्यवस्था से प्रभावित हो रहे हैं? यदि संबंधों को लाभ-हानि, सुविधा और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर देखा जाने लगे तो उनकी मानवीय गहराई प्रभावित हो सकती है।

1.12 ग्रामीण समाज और आर्थिक परिवर्तन

नई अर्थव्यवस्था का प्रभाव केवल शहरों तक सीमित नहीं रहा। ग्रामीण समाज भी बाजार, तकनीक, उपभोग और प्रवासन से प्रभावित हुआ। ग्रामीण जीवन में—

- कृषि का बाजार से संबंध
- ग्रामीण युवाओं का शहरों की ओर प्रवासन
- उपभोक्तावादी संस्कृति
- पारंपरिक पेशों में बदलाव
- भूमि संबंधी संकट जैसी स्थितियाँ दिखाई देती हैं।

हिन्दी कहानी में गाँव अब केवल परंपरा का प्रतीक नहीं है। वह भी आर्थिक परिवर्तन और बाजार की शक्तियों से प्रभावित होता हुआ दिखाई देता है।

1.13 प्रवासन और विस्थापन

नई अर्थव्यवस्था में रोजगार की तलाश में प्रवासन एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। गाँव से शहर, छोटे शहर से महानगर और भारत से विदेश की ओर जाने की आकांक्षा साहित्य में दिखाई देती है। प्रवासी व्यक्ति के सामने दोहरी समस्या होती है—

भौगोलिक विस्थापन, सांस्कृतिक विस्थापन

वह आर्थिक अवसर प्राप्त करता है, लेकिन अपने परिवार, समुदाय और सांस्कृतिक परिवेश से दूर हो जाता है। हिन्दी कहानी इस अनुभव को स्मृति, अकेलेपन और पहचान के संकट के माध्यम से प्रस्तुत करती है।

1.14 गरीबी और नई असमानता

नई अर्थव्यवस्था ने आर्थिक अवसरों का विस्तार किया, लेकिन विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचा। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक विषमता का प्रश्न महत्वपूर्ण बना रहा। एक ओर उच्च उपभोग और संपन्नता है, दूसरी ओर बेरोजगारी और असुरक्षित श्रम। हिन्दी कहानी इस विरोधाभास को प्रभावशाली रूप से सामने ला सकती है—

एक ही शहर में चमकदार मॉल और फुटपाथ पर रहने वाला परिवार।

यही दृश्य नई अर्थव्यवस्था की सामाजिक विषमता को प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करता है।

1.15 डिजिटल अर्थव्यवस्था और नया मनुष्य

समकालीन अर्थव्यवस्था में डिजिटल तकनीक की भूमिका बढ़ी है। मोबाइल, इंटरनेट, ऑनलाइन सेवाएँ, डिजिटल भुगतान, सोशल मीडिया और ऑनलाइन काम ने जीवन के अनेक क्षेत्रों को बदल दिया है। इसके सकारात्मक पक्षों के साथ कुछ मानवीय संकट भी हैं—

- डिजिटल अकेलापन
- लगातार उपलब्ध रहने का दबाव
- सूचना की अधिकता
- निजता का संकट
- आभासी पहचान
- वास्तविक संबंधों का कमजोर होना समकालीन कहानी के लिए यह एक नया विषय-क्षेत्र है।

1.16 मानवीय संवेदना का संकट

नई अर्थव्यवस्था का सबसे गंभीर साहित्यिक प्रश्न मानवीय संवेदना का संकट है। जब सफलता का मूल्यांकन मुख्यतः धन, पद, उत्पादकता और उपभोग से होने लगे तो करुणा, सहयोग, त्याग और सामुदायिकता जैसे मूल्य कमजोर पड़ सकते हैं। कहानीकार इस परिवर्तन को व्यक्ति के व्यवहार में पकड़ता है। व्यक्ति अधिक सफल हो सकता है, लेकिन क्या वह अधिक मानवीय भी हुआ है? यही प्रश्न नई अर्थव्यवस्था के विमर्श को साहित्यिक और नैतिक गहराई प्रदान करता है।

1.16.1 समय का संकट

नई अर्थव्यवस्था में समय स्वयं एक आर्थिक संसाधन बन जाता है। समय की कमी आधुनिक व्यक्ति की प्रमुख समस्या है। काम, यात्रा, डिजिटल संचार और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण व्यक्ति के पास—

- परिवार के लिए समय
- मित्रों के लिए समय
- स्वयं के लिए समय कम होता जाता है।

समकालीन कहानी में यह 'समय का संकट' आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन और तनाव का महत्वपूर्ण कारण बन सकता है।

1.17 सफलता और असफलता की नई परिभाषा

परंपरागत समाज में सफलता को परिवार, सामाजिक सम्मान और सामुदायिक प्रतिष्ठा से जोड़ा जाता था। नई अर्थव्यवस्था में सफलता का संबंध आय, करियर, पद, जीवनशैली और उपभोग से भी जुड़ गया है। इस परिवर्तन के कारण व्यक्ति स्वयं की तुलना दूसरों से करता है। सोशल मीडिया ने इस तुलना को और तीव्र किया है। इस प्रकार सफलता की सामाजिक परिभाषा व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और आत्म-मूल्य को प्रभावित कर सकती है। हिन्दी कहानी इस मनोवैज्ञानिक परिवर्तन को सूक्ष्म रूप में अभिव्यक्त कर सकती है।

1.18 अमानवीयता और बाजार-तर्क

बाजार का मूल तर्क लाभ और दक्षता है, जबकि मानव संबंधों का आधार संवेदना, विश्वास और सहयोग है। जब बाजार-तर्क जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश करता है तो मनुष्य को भी 'संसाधन', 'ग्राहक', 'कर्मचारी' या 'उपभोक्ता' के रूप में देखने की प्रवृत्ति बढ़ सकती है। साहित्य इस अमानवीयता का प्रतिरोध करता है क्योंकि साहित्य मनुष्य को उसकी संवेदना, स्मृति और अनुभव के साथ देखता है।

1.19 हिन्दी कहानी की आलोचनात्मक भूमिका

हिन्दी कहानी नई अर्थव्यवस्था की आलोचना केवल सीधे उपदेश के माध्यम से नहीं करती। वह छोटे-छोटे जीवन प्रसंगों के माध्यम से बड़े सामाजिक प्रश्न सामने रखती है। एक नौकरी खो चुका युवक, महानगर में अकेली स्त्री, प्रवासी मजदूर, कर्ज में डूबा किसान, उपभोग की दौड़ में शामिल परिवार या कॉरपोरेट कर्मचारी, ये सभी पात्र आर्थिक संरचना के मानवीय प्रभाव को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार कहानी 'व्यापक आर्थिक संरचना को व्यक्तिगत अनुभव में बदल देती है।'

1.20 समकालीन हिन्दी कहानी और प्रमुख रचनाकार

नई अर्थव्यवस्था के सामाजिक प्रभावों को समझने में समकालीन हिन्दी कहानी के अनेक रचनाकार उपयोगी हैं। उदय प्रकाश, संजीव, अखिलेश, असगर वजाहत, स्वयं प्रकाश, पंकज मित्र, ज्ञानरंजन, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मृदुला गर्ग आदि के लेखन में बदलते सामाजिक जीवन, बाजार, मध्यवर्ग, श्रम, स्त्री और आधुनिक जीवन की जटिलताओं के विभिन्न रूप दिखाई देते हैं। इन रचनाकारों को किसी एक 'नई अर्थव्यवस्था' साहित्यिक आंदोलन के अंतर्गत रखना उचित नहीं होगा, बल्कि उनकी रचनाओं में बदलती सामाजिक-आर्थिक संरचना के अलग-अलग प्रभावों की पहचान की जा सकती है।

1.21 उदय प्रकाश की कहानियों में व्यवस्था और व्यक्ति

उदय प्रकाश के कहानी-संसार में आधुनिक संस्थाओं, सत्ता-संरचनाओं, मध्यवर्गीय असुरक्षा और सामाजिक विडंबनाओं की तीखी उपस्थिति दिखाई देती है। उनकी कहानियाँ यह दिखाती हैं कि आधुनिक व्यवस्था में व्यक्ति किस प्रकार संस्थागत शक्ति और आर्थिक-सामाजिक असमानता के बीच फँस सकता है। उनके यहाँ आधुनिकता केवल तकनीकी प्रगति नहीं बल्कि सत्ता और मनुष्य के संबंधों का जटिल प्रश्न भी है।

1.22 संजीव की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

संजीव के कथा-साहित्य में ग्रामीण समाज, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक असमानता और वंचित समुदायों के जीवन की विविध स्थितियाँ दिखाई देती हैं। उनका कथा-संसार इस बात को स्पष्ट करता है कि आर्थिक परिवर्तन का प्रभाव वर्ग, जाति और क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग हो सकता है।

1.23 चित्रा मुद्गल और श्रम—संसार

चित्रा मुद्गल के साहित्य में श्रमिक वर्ग, औद्योगिक जीवन और सामाजिक संघर्ष महत्वपूर्ण विषय हैं। उनके लेखन के संदर्भ में नई अर्थव्यवस्था से पहले और बाद के श्रम—संसार के परिवर्तन को समझा जा सकता है। श्रमिक की समस्या केवल मजदूरी की समस्या नहीं बल्कि सम्मान, परिवार, सुरक्षा और अस्तित्व की समस्या भी है।

1.24 ममता कालिया और मध्यवर्गीय जीवन

ममता कालिया के लेखन में मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री, परिवार, नौकरी और बदलती जीवनशैली की जटिलताएँ दिखाई देती हैं। उनके कथा—संसार के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन घरेलू जीवन तथा व्यक्तिगत आकांक्षाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

1.25 नई अर्थव्यवस्था और मानवीय संबंधों का पुनर्गठन

नई अर्थव्यवस्था ने संबंधों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उनका स्वरूप बदला है। इस परिवर्तन के कुछ रूप हैं—

पारंपरिक स्थिति	नई आर्थिक स्थिति
सामुदायिक संबंध	व्यक्तिगत नेटवर्क
स्थायी रोजगार	अस्थायी/अनुबंध आधारित रोजगार
आवश्यकता—केंद्रित उपभोग	आकांक्षा—केंद्रित उपभोग
संयुक्त परिवार	एकल/स्थानांतरित परिवार
स्थानीय बाजार	वैश्विक बाजार
प्रत्यक्ष संवाद	डिजिटल संवाद
सामाजिक प्रतिष्ठा	आर्थिक/उपभोक्ता प्रतिष्ठा

यह परिवर्तन साहित्य में मानवीय संकट की नई स्थितियों को जन्म देता है।

1.26 नई अर्थव्यवस्था – सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष

नई अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन एकतरफा नहीं होना चाहिए। इसके अनेक सकारात्मक प्रभाव भी हैं—

1.26.1 सकारात्मक पक्ष

- रोजगार के नए अवसर।

- तकनीकी विकास ।
- सूचना तक व्यापक पहुँच ।
- उपभोक्ता विकल्पों में वृद्धि ।
- स्त्रियों के लिए रोजगार के नए अवसर ।
- वैश्विक संपर्क ।
- सेवा क्षेत्र का विस्तार ।
- उद्यमिता की संभावनाएँ ।

1.26.2 संकटपूर्ण पक्ष

- आर्थिक असमानता ।
- रोजगार की असुरक्षा ।
- श्रम का दबाव ।
- उपभोक्तावाद ।
- सामाजिक अलगाव ।
- मानसिक तनाव ।
- पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन ।
- सांस्कृतिक समरूपीकरण ।
- ग्रामीण-शहरी विभाजन ।
- विस्थापन ।

हिन्दी कहानी इन दोनों पक्षों के बीच मौजूद तनाव को अधिक मानवीय स्तर पर प्रस्तुत करती है ।

1.27 साहित्यिक दृष्टि से नई अर्थव्यवस्था का महत्त्व

नई अर्थव्यवस्था ने हिन्दी कहानी के यथार्थ को अधिक बहुस्तरीय बनाया है । अब कहानी में गरीबी और संपन्नता के पारंपरिक द्वंद्व के साथ उपभोक्ता संस्कृति, कॉरपोरेट जीवन, डिजिटल तकनीक, नए मध्यवर्ग और वैश्विक आकांक्षाएँ भी उपस्थित हैं । इससे कहानी के पात्र भी बदलते हैं । आज का पात्र केवल किसान या मजदूर नहीं है, वह—

- सॉफ्टवेयर कर्मचारी
- बैंक कर्मचारी
- कॉल सेंटर कर्मचारी

- प्रवास श्रमिक
- बेरोजगार स्नातक
- कॉरपोरेट कर्मचारी
- स्वतंत्र पेशेवर
- ऑनलाइन कामगार भी हो सकता है।

1.28 मानवीय संकट का मनोवैज्ञानिक आयाम

नई अर्थव्यवस्था का संकट केवल आर्थिक नहीं है। उसका मनोवैज्ञानिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है।

1.28.1 व्यक्ति के भीतर

- असफलता का भय
- प्रतिस्पर्धा
- असुरक्षा
- अकेलापन
- भविष्य की चिंता
- सामाजिक तुलना
- आत्म-मूल्य का संकट उत्पन्न हो सकता है।

समकालीन हिन्दी कहानी इन आंतरिक स्थितियों को बाहरी आर्थिक परिस्थितियों से जोड़ती है।

1.29 नई अर्थव्यवस्था और नैतिक संकट

नई अर्थव्यवस्था के संदर्भ में नैतिकता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। जब लाभ और प्रतिस्पर्धा प्रमुख मूल्य बनते हैं तो व्यक्ति के सामने कई नैतिक द्वंद्व उत्पन्न होते हैं। उसे तय करना पड़ता है—

- क्या सफलता के लिए सिद्धांतों से समझौता किया जाए?
- क्या नौकरी बचाने के लिए अन्याय स्वीकार किया जाए?
- क्या आर्थिक लाभ मानवीय संबंधों से अधिक महत्वपूर्ण है?
- क्या उपभोग ही सुख का आधार है?

हिन्दी कहानी इन प्रश्नों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सामने लाती है।

1.30 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि नई अर्थव्यवस्था हिन्दी कहानी के लिए केवल आर्थिक परिवर्तन का विषय नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और समाज के बदलते संबंधों को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए। रोजगार के नए अवसर, तकनीकी विकास, वैश्विक संपर्क, सेवा क्षेत्र का विस्तार और उपभोक्ता विकल्पों में वृद्धि। लेकिन इसके समानांतर असमानता, असुरक्षित रोजगार, प्रवासन, विस्थापन, उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और अकेलेपन जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। हिन्दी कहानी इन अंतर्विरोधों को मानवीय अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन कहानी में केवल आँकड़े नहीं बनते, वे पात्रों के जीवन, संबंधों, इच्छाओं, भय और संघर्ष में बदल जाते हैं। विशेष रूप से समकालीन हिन्दी कहानी में मध्यवर्गीय व्यक्ति का द्वंद्व महत्वपूर्ण है। एक ओर वह नई अर्थव्यवस्था द्वारा उपलब्ध कराए गए अवसरों का लाभ उठाना चाहता है, दूसरी ओर वह उसी व्यवस्था की प्रतिस्पर्धा और असुरक्षा से परेशान है। इसी प्रकार स्त्री आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करते हुए भी घरेलू और सामाजिक असमानताओं से जूझती है। प्रवासी श्रमिक आर्थिक अवसर की तलाश में विस्थापन का अनुभव करता है। किसान बाजार की नई संरचनाओं में स्वयं को पुनर्संस्थापित करने के संघर्ष से गुजरता है। हिन्दी कहानी इसी अधूरेपन को पहचानती है। वह बाजार की चमक के पीछे छिपे अंधेरे को सामने लाती है और पूछती है कि आधुनिक विकास की प्रक्रिया में मनुष्य का स्थान क्या है। यही प्रश्न नई अर्थव्यवस्था और मानवीय संकट के विमर्श को समकालीन हिन्दी साहित्य में प्रासंगिक बनाता है।

संदर्भ-सूची:

- आचार्य, शुक्ल, रामचंद्र— हिन्दी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद— हिन्दी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- शर्मा, रामविलास— साहित्य और समाज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- वाजपेयी, नंददुलारे— हिन्दी साहित्य— बीसवीं शताब्दी. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।
- नगेंद्र —हिन्दी साहित्य का इतिहास. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- प्रेमचंद— गोदान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- संजीव— समकालीन हिन्दी कहानी. से संबंधित प्रकाशित कहानी—संग्रह एवं आलोचनात्मक लेख।
- भारत सरकार— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- अग्रवाल, रामचंद्र— साहित्य और समाज. साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।
- सिंह, बच्चन— आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास. लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली।